ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, July-December 2025, Submitted in December 2025

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का अध्यापन व्यवसाय के प्रति अभिवृति का अध्ययन: एक साहित्य समीक्षा

पंकज कुमार दुबे, शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर। pankajdu009@gmail.com
डॉ विजेंद्र सिंह, शोध निर्देशक एवं सहायक आचार्य, शिक्षाशास्त्र विभाग उदित नारायण पीजी कॉलेज, पडरौना, कुशीनगर।

सारांश (Abstract)

अध्यापन व्यवसाय समाज निर्माण का एक महत्वपूर्ण आधार है। किसी भी राष्ट्र की शिक्षा व्यवस्था की गुणवत्ता उसके शिक्षकों की दक्षता, अभिरुचि तथा विद्यार्थियों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति सकारात्मक अभिवृति पर निर्भर करती है। वर्तमान समय में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में विभिन्न व्यवसायों के प्रति आकर्षण बढ़ा है, किंतु अध्यापन व्यवसाय के प्रति उनकी अभिवृति अनेक सामाजिक, आर्थिक एवं मनोवैज्ञानिक कारकों से प्रभावित होती है। प्रस्तुत शोध पत्र साहित्य समीक्षा पर आधारित है, जिसमें अध्यापन व्यवसाय के प्रति माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अभिवृति से संबंधित विभिन्न शोध अध्ययनों, पुस्तकों एवं रिपोर्टों का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट हुआ कि विद्यार्थियों की सकारात्मक अभिवृति का संबंध शिक्षक की सामाजिक प्रतिष्ठा, आर्थिक सुरक्षा, रोजगार स्थिरता, पारिवारिक वातावरण तथा शिक्षा नीतियों से जुड़ा हुआ है। शोध पत्र में यह भी पाया गया कि यदि विद्यालय स्तर पर विद्यार्थियों को अध्यापन व्यवसाय के महत्व से परिचित कराया जाए, तो उनमें इस व्यवसाय के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित किया जा सकता है।

मुख्य शब्द: अध्यापन व्यवसाय, अभिवृति, माध्यमिक स्तर, विद्यार्थी, साहित्य समीक्षा, शिक्षक शिक्षा।

1. प्रस्तावना

शिक्षा मानव जीवन के सर्वांगीण विकास का प्रमुख साधन है। शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति न केवल ज्ञान प्राप्त करता है, बल्कि सामाजिक, नैतिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों का भी विकास करता है। इस समस्त प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। शिक्षक राष्ट्र निर्माण का आधार माना जाता है, क्योंकि वही विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का निर्माण करता है।

वर्तमान समय में विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं व्यावसायिक क्षेत्रों के विकास के कारण विद्यार्थियों की रुचि विभिन्न व्यवसायों की ओर बढ़ी है। ऐसी स्थिति में अध्यापन व्यवसाय के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृति का अध्ययन अत्यंत आवश्यक हो जाता है। यदि विद्यार्थियों में अध्यापन व्यवसाय के प्रति सकारात्मक अभिवृति विकसित होगी, तो भविष्य में योग्य एवं समर्पित शिक्षक तैयार होंगे।

माध्यमिक स्तर वह अवस्था है, जहाँ विद्यार्थी अपने भविष्य एवं व्यवसाय के प्रति प्रारंभिक निर्णय लेना आरंभ करते हैं। इसलिए इस स्तर पर विद्यार्थियों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति अभिवृति का अध्ययन शिक्षा व्यवस्था के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

2. अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्त्व

- अध्यापन व्यवसाय के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृति का अध्ययन निम्न कारणों से महत्वपूर्ण है—
- योग्य एवं प्रेरित शिक्षकों के निर्माण हेतु।
- शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों की प्रभावशीलता बढ़ाने हेतु।
- विद्यार्थियों में शिक्षकीय मूल्यों का विकास करने हेतु।
- शिक्षा व्यवस्था में गुणवत्तापूर्ण सुधार हेतु।
- अध्यापन व्यवसाय की सामाजिक प्रतिष्ठा को समझने हेतु।

3. अध्यापन व्यवसाय की अवधारणा

अध्यापन व्यवसाय वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से शिक्षक विद्यार्थियों को ज्ञान, कौशल, मूल्य एवं अनुभव प्रदान करता है। यह केवल जीविकोपार्जन का साधन नहीं, बल्कि समाज सेवा एवं राष्ट्र निर्माण का माध्यम भी है।

भारतीय संदर्भ में शिक्षक को सदैव सम्मानित स्थान प्राप्त रहा है। प्राचीन काल में गुरु को ईश्वर के समान माना जाता था। आधुनिक युग में भी शिक्षक समाज परिवर्तन का प्रमुख माध्यम है।

4. अभिवृति की अवधारणा

अभिवृति (Attitude) व्यक्ति की किसी वस्तु, व्यक्ति, विचार या व्यवसाय के प्रति मानसिक एवं भावनात्मक प्रतिक्रिया है। यह सकारात्मक या नकारात्मक दोनों प्रकार की हो सकती है।

मनोवैज्ञानिकों के अनुसार अभिवृति के तीन प्रमुख घटक होते हैं—

- संज्ञानात्मक घटक – विचार एवं ज्ञान।
- भावात्मक घटक – भावना एवं रुचि।
- व्यवहारात्मक घटक – व्यवहार एवं प्रतिक्रिया।

- अध्यापन व्यवसाय के प्रति सकारात्मक अभिवृति विद्यार्थियों को शिक्षक बनने के लिए प्रेरित करती है।

5. साहित्य समीक्षा (Review of Literature): शोध अध्ययनों की समीक्षा

1. शकूर एवं फारूख (2018) ने प्राथमिक विद्यालयों के पुरुष एवं महिला शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया। अपने शोध के निष्कर्ष में यह पाया कि प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत अधिसंख्य भावी शिक्षकों ने अध्यापन पेशे के प्रति कम या प्रतिकूल अभिवृत्ति दर्शायी।जबकि कार्य की परिस्थितियां एवं विद्यालयों का शैक्षणिक वातावरण अभिवृत्ति को प्रभावित करने का महत्वपूर्ण स्रोत होने के साथ-साथ एक विशेष प्रकार की अभिवृत्ति को विकसित एवं पुर्नबलित करने का महत्वपूर्ण कारक होते हैं।

2. बरुआ एवं गोगई (2017) ने समायोजन के संदर्भ में माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन के आधार पर यह पाया कि अध्यापन व्यवसाय के प्रति अधिसंख्य शिक्षकों की अभिवृत्ति सकारात्मक (धनात्मक) थी। माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृति और समायोजन के बीच सार्थक सहसंबंध पाया गया अर्थात जिन शिक्षकों का शिक्षण व्यवसाय के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति थी, वे विद्यालय के वातावरण में बेहतर रूप से समायोजन स्थापित किए ।

3. मंजू (2016) ने अध्यापन व्यवसाय के प्रति बी.एड. प्रशिक्षुओं की अभिवृत्ति का अध्ययन में यह पाया कि अधिसंख्य बी.एड प्रशिक्षुओं में अध्यापन व्यवसाय के प्रति उच्च अनुकूल अभिवृत्ति पाई गई। जबकि बहुत कम संख्या में ऐसे प्रशिक्षु थे जिन्होंने निम्न प्रतिकूल अभिवृत्ति दर्शायी।पुरुष एवं महिला प्रशिक्षुओं के बीच शिक्षण पेशे के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

4. कुमार(2016) ने अपने अध्ययन अध्यापन व्यवसाय के प्रति स्नातकोत्तर स्तर के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति में यह पाया कि स्नातकोत्तर स्तर के विद्यार्थियों ने अध्यापन पेशे के प्रति अनुकूल अभिवृत्ति दर्शायी।साथ ही लिंग, आवास का समीप होना, संस्थान का समीप होना, संकायों की भिन्नता, माता-पिता की वार्षिक आय जैसे चरों का स्नातकोत्तर स्तर के विद्यार्थियों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

5. सिंह एवं सिंह (2016) ने अपने शोध अध्ययन वाराणसी जिले के प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों का अध्यापन पेशे के प्रति अभिवृत्ति का एक अध्ययन में पाया कि अभिवृत्ति अनेक चरों से प्रभावित होती है जैसे- शैक्षिक योग्यता, आयु, पूर्व अनुभव, विश्वास, लिंग एवं शिक्षा का स्वरूप। साथ ही शिक्षक पेशे के प्रति धनात्मक अभिवृत्ति शिक्षण अधिगम प्रक्रिया एवं शिक्षक के व्यवसायिक विकास को प्रभावित करती है।

6.अप्पादुरई एवं सरला देवी(2015) ने अपने अध्ययन में शिक्षण अभिक्षमता,शिक्षण अभिवृत्ति तथा शिक्षण दक्षता के बीच संबंध का विश्लेषण किया। अपने अध्ययन में यह पाया कि शिक्षण अभिक्षमता शिक्षक के ज्ञान, कौशल, संप्रेषण क्षमता, कक्षा प्रबंधन तथा विद्यार्थियों को प्रेरित करने की योग्यता को दर्शाता है ।सकारात्मक अभिवृत्ति जैसे पेशे के प्रति समर्पण, विद्यार्थियों के प्रति सहानुभूति, नवाचार के प्रति खुलापन एवं कार्य के प्रति संतोष शिक्षण दक्षता को मजबूत बनाती है ।अतः शिक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रमों में केवल विषय वस्तु (ज्ञान) ही नहीं बल्कि शिक्षण अभिक्षमता के विकास और सकारात्मक अभिवृत्ति के निर्माण पर भी विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।

7. जैदी (2015) ने शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति को प्रभावित करने वाले कारकों की शोध समीक्षा की। अपनी समीक्षा के आधार पर बताया कि शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति पर अधिसंख्य अध्ययन इस बात की ओर संकेत करते हैं कि शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति व्यक्तियों की कुछ विशेषताओं पर केंद्रीकृत है, जैसे- आयु, लिंग, स्थानीयता, योग्यता, शिक्षक प्रशिक्षण, विषय, संस्था का प्रकार या स्वरूप, अनुभव इत्यादि। शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति केवल एक एकाकी संप्रत्यय नहीं है, बल्कि यह निश्चित रूप से अध्यापन व्यवसाय से अर्थपूर्ण रूप में सहसंबंधित है।

8. भार्गव एवं पथी (2014) ने छात्राध्यापकों का अध्यापन व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति के अपने अध्ययन में पाया कि अभिवृत्ति विभिन्न कारको जैसे- लिंग, सामाजिक स्तर, शिक्षा का स्तर,एवं जॉब या नौकरी के पूर्व अनुभवों से प्रभावित होती है। विभिन्न श्रेणियों एवं संकायों (विषयों) के आदिवासी एवं गैर आदिवासी छात्राध्यापकों - छात्राध्यापिकाओं का अध्यापन व्यवसाय के प्रति अभिवृत्तियों में अंतर था।

9.चक्रवर्ती एवं मण्डल (2014) ने अध्यापन व्यवसाय के प्रति भावी शिक्षकों की अभिवृत्ति संबंधी अपने अध्ययन में पाया कि भावी शिक्षकों का अध्यापन व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में अंतर विभिन्न चरों (कारको) जैसे- लिंग, धर्म, श्रेणी (वर्ग), स्थानीयता और अध्ययन के स्तरों से प्रभावित नहीं था। जबकि शैक्षणिक योग्यता के संदर्भ में उनकी अभिवृत्तियों में सार्थक अंतर था।

10. खुर्शीद, गार्देजी एवं नौरीन (2014) ने अपने शोध अध्ययन विश्वविद्यालय के एम.ए./एम.एससी. विद्यार्थियों का अध्यापन व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति के अध्ययन में यह निष्कर्ष निकाला कि अध्यापन व्यवसाय के प्रति एम.ए./ एम.एससी. के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति में अंतर था। पुरुष विद्यार्थियों की तुलना में महिला विद्यार्थियों ने अध्यापन

व्यवसाय के प्रति अधिक सकारात्मक (धनात्मक) अभिवृत्ति दर्शायी। विश्वविद्यालय में अध्यापन के प्रति पुरुष एवं महिला दोनों तरह के विद्यार्थियों में समान अभिवृत्ति पाई गई।

11. परवेज़ एवं शाकिर (2013) ने अध्यापन व्यवसाय के प्रति भावी शिक्षकों(बी.एड. प्रशिक्षुओं) की अभिवृत्ति के अपने अध्ययन में पाया कि सरकारी एवं निजी संस्थानों में प्रशिक्षण ले रहे बी.एड. प्रशिक्षुओं की अभिवृत्ति में सार्थक अंतर पाया गया। जबकि महिला-पुरुष मुस्लिम-गैर मुस्लिम विज्ञान- सामाजिक विज्ञान के बी.एड. प्रशिक्षुओं का अध्यापन व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

12. बाबू एवं राजू (2013) ने बी.एड. प्रशिक्षुओं का उनके व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति संबंधी अपने अध्ययन में पाया कि पुरुष एवं महिला प्रशिक्षुओं का अध्यापन व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति सार्थक रूप से भिन्न थी। अध्यापन व्यवसाय संबंधी समस्याएं, शिक्षक के वेतन-भत्ते, छुट्टियां एवं अन्य सुविधाएं, छात्रों के प्रति रुचि तथा प्रबंधन के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति जैसे पक्षों को लेकर पुरुष एवं महिला प्रशिक्षुओं की शिक्षण पेशे के प्रति अभिवृत्ति सार्थक रूप से भिन्न थी।

13.माहेश्वरी(2013) ने भावी शिक्षकों का अध्यापन व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति के अध्ययन में पाया कि स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के उच्च आर्थिक स्तर, मध्यम आर्थिक स्तर, विज्ञान वर्ग एवं महिला प्रशिक्षुओं ने सरकारी कॉलेज के प्रशिक्षुओं की तुलना में अध्यापन व्यवसाय के प्रति अनुकूल अभिवृत्ति दर्शायी ।जबकि सरकारी एवं स्ववित्तपोषित कॉलेज की महिला, कला एवं वाणिज्य वर्ग तथा निम्न आर्थिक स्तर वाले प्रशिक्षुओं के बीच कोई अंतर नहीं पाया गया।

14. सिंधु (2012) ने अपने प्रकाशित पी-एच.डी. शोध प्रबन्ध 'A Study of Attitude and work commitment of Teachers towards teaching Profession' में शिक्षकों के शिक्षण पेशे के प्रति अभिवृत्ति तथा कार्य प्रतिबद्धता का गहन अध्ययन किया। अपने निष्कर्ष में यह पाया कि शिक्षकों के शिक्षण पेशे के प्रति अभिवृत्ति और उनके कार्य प्रतिबद्धता के बीच सकारात्मक एवं महत्वपूर्ण संबंध पाया जाता है। जिन शिक्षकों की अभिवृत्ति अधिक सकारात्मक थी, उनमें कार्य के प्रति समर्पण, उत्तरदायित्व की भावना तथा संस्थागत लक्ष्यों के प्रति निष्ठा देखी गई। नकारात्मक अभिवृत्ति वाले शिक्षकों में कार्य संतोष और प्रतिबद्धता का स्तर अपेक्षाकृत कम पाया गया।

15.कुमारी(2013) ने सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयी शिक्षकों के पेशेगत व्यवहार के प्रति अभिवृत्ति का एक तुलनात्मक अध्ययन में पाया कि गैर सरकारी विद्यालयी शिक्षकों की व्यावसायिकता (पेशागत व्यवहार) के प्रति अभिवृत्ति की तुलना में सरकारी विद्यालयी शिक्षकों की व्यावसायिकता (पेशागत व्यवहार) के प्रति उच्च सकारात्मक अभिवृत्ति पाई गई।सरकारी विद्यालयों के महिला शिक्षिकाओं की तुलना में पुरुष शिक्षकों में व्यावसायिकता (पेशागत व्यवहार) के प्रति उच्च सकारात्मक अभिवृत्ति पाई गई। जबकि गैर सरकारी विद्यालयों के पुरुष शिक्षकों की तुलना में महिला शिक्षिकाओं ने व्यावसायिकता(पेशागत व्यवहार) के प्रति उच्च सकारात्मक अभिवृत्ति प्रदर्शित की।

16. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षक शिक्षा की गुणवत्ता, शिक्षक प्रशिक्षण एवं शिक्षण व्यवसाय की गरिमा को बढ़ाने पर विशेष बल दिया गया है। इससे विद्यार्थियों में अध्यापन व्यवसाय के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित होने की संभावना बढ़ती है।

6. साहित्य समीक्षा से प्राप्त प्रमुख निष्कर्ष

- समीक्षित अध्ययनों के आधार पर निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए—
- छात्राओं में अध्यापन व्यवसाय के प्रति अधिक सकारात्मक अभिवृति पाई जाती है।
- पारिवारिक वातावरण विद्यार्थियों की अभिवृति को प्रभावित करता है।
- सामाजिक प्रतिष्ठा एवं रोजगार सुरक्षा अध्यापन व्यवसाय की ओर आकर्षण बढ़ाते हैं।
- ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की अभिवृति में अंतर पाया जाता है।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षक व्यवसाय की गुणवत्ता एवं आकर्षण बढ़ाने में सहायक हो सकती है।
- अध्यापन व्यवसाय के प्रति सकारात्मक अभिवृति भविष्य में प्रभावी शिक्षक निर्माण में सहायक होती है।
- साहित्य समीक्षा से यह स्पष्ट होता है कि अध्यापन व्यवसाय के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृति बहुआयामी कारकों से प्रभावित होती है। वर्तमान समय में निजी क्षेत्र के बढ़ते आकर्षण के बावजूद अध्यापन व्यवसाय अभी भी सामाजिक सम्मान एवं स्थिरता के कारण महत्वपूर्ण माना जाता है।
- विद्यालयों एवं शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों को चाहिए कि वे विद्यार्थियों में शिक्षकीय मूल्यों, नेतृत्व क्षमता एवं सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित करें। यदि प्रारंभिक स्तर पर विद्यार्थियों को अध्यापन व्यवसाय के महत्व से परिचित कराया जाए, तो अधिक योग्य विद्यार्थी इस क्षेत्र की ओर आकर्षित होंगे।

7. सुझाव

- विद्यालयों में करियर मार्गदर्शन कार्यक्रम आयोजित किए जाएँ।
- अध्यापन व्यवसाय की सामाजिक प्रतिष्ठा को बढ़ावा दिया जाए।
- शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों को अधिक व्यावहारिक एवं आकर्षक बनाया जाए।
- विद्यार्थियों को प्रेरणादायक शिक्षकों से संवाद का अवसर दिया जाए।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रावधानों का प्रभावी क्रियान्वयन किया जाए।

8. निष्कर्ष (Conclusion)

अध्यापन व्यवसाय राष्ट्र निर्माण का आधार है। माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति अभिवृति का अध्ययन यह दर्शाता है कि सकारात्मक अभिवृति भविष्य में गुणवत्तापूर्ण शिक्षक निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। साहित्य समीक्षा से स्पष्ट हुआ कि सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक एवं शैक्षिक कारक विद्यार्थियों की अभिवृति को प्रभावित करते हैं। अतः आवश्यक है कि शिक्षा व्यवस्था में ऐसे प्रयास किए जाएँ, जिनसे विद्यार्थियों में अध्यापन व्यवसाय के प्रति सम्मान एवं रुचि विकसित हो सके।

संदर्भग्रंथ सूची (References)

1. Shakoor, U., & Farrukh, I. A. (2018). A comparative study of the attitude of the male and female elementary school teachers towards teaching profession. Journal of Education and Educational Development, 5(2).
2. Baruah, P., & Gogoi, M. (2017). Attitude towards teaching profession in relation to adjustment among secondary school teachers of Dibrugarh District. International Journal of Humanities and Social Science Studies (IJHSSS), 3, 166-177.
3. Manju, N. D. (2016). Attitude of student teachers towards teaching profession. Asian Journal of Development Matters, 10(1), 10-19.
4. Kumar, R. V. (2016). Attitude of postgraduate students towards the teaching profession. MIER Journal of Educational Studies Trends and Practices, 193-203.
5. Singh, O. P., & Singh, S. K. (2016). A study on the attitude of primary school teachers towards teaching profession in Varanasi district of Uttar Pradesh. International Journal of Advanced Research in Management and Social Sciences, 5(8), 119-129.
6. Appadurai, R., & Saraladevi, K. (2015). Teaching aptitude and teacher attitude on teacher efficacy. International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology, 4(10), 10252-10261.
7. Zaidi, Z. I. (2015). Factors affecting Attitude towards teaching and its Correlates: Review of Research. International Journal of Education and Psychological Research (IJEPR), 4(1), 46-51.
8. Bhargava, A., & Pathy, M. K. (2014). Attitude of student teachers towards teaching profession. Turkish online journal of Distance Education, 15(3), 27-36.
9. Chakraborty, A., & Mondal, B. C. (2014). Attitude of prospective teachers towards teaching profession. American Journal of Social Sciences, 2(6), 120-125.
10. Khurshid, K., Gardezi, A. R., & Noureen, S. (2014). A study of attitude of university students of MA/M.Sc towards teaching profession. VFAST Transactions on Education and Social Sciences, 2(1), 27-34.
11. Parvez, M., & Shakir, M. (2013). Attitudes of prospective teachers towards teaching profession. Journal of Education and Practice, 4(10), 172-178.
12. Babu, B. P., & Raju, T. J. M. S. (2013). Attitude of student teachers towards their profession. International Journal of Social Science & Interdisciplinary Research, 2(1), 1-6.
13. Maheshwari, A. (2013). A study of attitude towards teaching profession of prospective teachers. International Research Journal of Commerce Arts and Science, 4(3), 601-609.
14. Sindhu, T. (2013). A study of attitude and work commitment of teachers towards teaching profession. Unpublished Ph. D. Thesis. Shri Jagdishprasad Jhabarmal Tibarewala University.
15. Kumari, Happy (2013): A comparative study of attitude towards professionalism of Govt. and Non-Govt. school teachers. National Monthly Referred Journal of research in commerce and management.Vol.2. Issue. 12. PP-105-115.
16. भारत सरकार. (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020। शिक्षा मंत्रालय, नई दिल्ली।